**प्रेस विज्ञप्ति**

**आध्यात्मिकता जीवन का एक हिस्सा नहीं बल्कि वास्तविकता है– डा॰ मदन मोहन वर्मा**
**जीवन की व्यवहारिकता से ही समाज का परिवर्तन संभव – ऊषा भसीन**
**आध्यात्मिकता परिस्थितियों से भागना नहीं बल्कि उनसे सामना करना सिखाती है**
**19 नवम्बर 2016 गुरूग्राम, हरियाना।**

आध्यात्मिकता जीवन का एक हिस्सा नहीं बल्कि वास्तविकता है। आध्यात्मिकता और धर्म में रात-दिन का अन्तर है। **उक्त विचार डा॰ मदन मोहन वर्मा (अध्यक्ष, इन्टर पेथ, इण्डिया) ने** ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ा कलां स्थित **ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर,** गुरूग्राम, हरियाना में **स्पार्क विंग,** राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, ब्रह्माकुमारीज़ **द्वारा ''स्पेक्ट्रम ऑफ स्प्रीच्युअलिटी – ए होलीस्टिक एप्रोच रिसर्च'' विषय** पर आयोजित दो दिवसीय **''स्प्रीच्युअलिटी इन रिसर्चर्स कॉन्फ्रेन्स''** के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता जीवन में एक व्यापक दृष्टिकोण का निमार्ण करती है। आध्यात्मिकता देश और धर्म से ऊपर उठकर सर्व जन हिताय और सर्व जन सुखाय का सन्देश देती है। हम सभी आत्माएं एक समान हैं, हमारे मूल स्वरूप में कोई अन्तर नहीं है। डा॰ वर्मा ने कहा कि वर्तमान समय विश्व की जो दशा है, उस सन्दर्भ में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। आज हमें पुनः अपने आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को जाग्रत कर समाज व विश्व को नई दिशा देने की आवश्यकता है।

**दूरदर्शन एवं प्रसार भारती की पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक ऊषा भसीन ने** अपने उद्बोधन में बताया कि दुनिया में आज अच्छे विचारों की कोई कमी नहीं है, लेकिन जरूरत है उन्हें जीवन में लाने की। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था अपने व्यवहारिक जीवन के द्वारा दूसरों को प्रेरणा देने का कार्य बखूबी कर रही है। भसीन ने कहा कि आध्यात्मिकता जीवन को बेहतर बनाती है। आध्यात्मिकता हमारे में एकता, नैतिकता, शान्ति एवं भाईचारे जैसे मौलिक गुणों का संचार करती है।

**ब्रह्माकुमारीज़, ओआरसी की निदेशिका बी॰ के॰ आशा दीदी ने** अपने आर्शीवचन में कहा कि आजकी इस हाय हाय! की दुनिया को वाह वाह! दुनिया में आध्यात्मिकता से ही बदला जा सकता है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता हमें ये नहीं सिखाती कि सबकुछ छोड़कर जंगल में चले जाएं बल्कि सबकुछ करते हुए अपने जीवन को बेहतर बनाएं। इस भौतिक दुनिया की चीज़ों का उपयोग करते हुए भी उनके प्रभाव से मुक्त रहें।

**डी॰आर॰डी॰ओ॰ के वैज्ञानिक डा॰ सुशील चन्द्र ने** कार्यक्रम के विषय को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य शोध व अनुसंधान के क्षेत्र में एक सकारात्मक परिवर्तन लाना है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था, डीआरडीओ तथा अन्य रिसर्च संस्था के साथ मिलकर इस क्षेत्र में कई प्रोजेक्ट पर एक साथ कार्य कर रहे हैं। डा॰ चन्द्र ने कहा कि राजयोग के द्वारा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभावों के बारे में हमने कई प्रयोग किये हैं। कोरपोरेट क्षेत्र में भी इससे कार्य क्षमताओं के साथ-साथ जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बल मिला है।

कार्यक्रम में विशेष रूप से आस्ट्रेलिया से आए **प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डा॰ रिचर्ड ग्रिफिथ** भी उपस्थित थे। मुम्बई से आई वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका तथा स्पार्क विंग, क्षेत्रिय संयोजिका (मुम्बई) **बी॰ के॰ अल्का बहन** ने सभी को योग की गहन अनुभूति कराई। **बी॰ के॰ सरोज बहन** स्पार्क विंग, क्षेत्रिय संयोजिका, दिल्ली ने शब्दों के द्वारा सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन बी॰ के॰ एकता

बहन ने किया। दो दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में अनेक विषयों पर चर्चा के साथ-साथ कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में विभिन्न अनुसंधान के क्षेत्रों से जुड़े वैज्ञानिकों सहित 400 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

**कैप्शन:** 1. डा॰ मदन मोहन वर्मा

2. ऊषा भसीन

3. दीप प्रज्ज्वलित करते हुए दाएं से डा॰ सुशील चन्द्र, डा॰ रिचर्ड ग्रिफिथ, डा॰ मदन मोहन वर्मा, आशा दीदी, बी॰ के॰ अल्का बहन, बी॰ के॰ सरोज, ऊषा भसीन एवं अन्य।